दैनिक जागरण
सबरंग
शहर को जानने के...
रांची, रविवार 23 नवंबर, 2025
सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@rch.jagran.com
https://www.facebook.com/Jagransabrang Ranchi/

धरती आबा संग्रहालय

शहर को एक और संग्रहालय मिल गया। धरती आबा संग्रहालय। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) द्वारा क्यूरेट किया गया। विकास भारती बिशुनपुर, बरियातू कैंपस में इसे देख सकते हैं। २९ नवंबर को इसका भव्य उद्घाटन होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता पद्मभूषण रामबहादुर राय करेंगे। मुख्य अतिथि होंगे जनजातीय कार्य मंत्रालय के मंत्री जुएल ओराम, विशिष्ट अतिथि रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ व विकास भारती के सचिव पद्मश्री डा अशोक भगत होंगे। इस अवसर पर क्रांति नायक धरती आबा बिरसा मुंडा सहित कई पुस्तकों का लोकार्पण भी होगा। इस नए संग्रहालय के बारे में बता रहे हैं **संजय कृष्ण**।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा परिकल्पित और संवर्धित संग्रहालय अपनी चार एकीकृत दीर्घाओं के माध्यम से झारखंड के आदिवासी जीवन और परंपराओं का एक समग्र आख्यान प्रस्तुत करता है। ये प्रदर्शनियां सामूहिक रूप से आदिवासी संस्कृति में कला, आजीविका, आध्यात्मिकता और पर्यावरण के बीच गहरे अंतर्संबंधों को दर्शाती हैं। पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्रों और अनुष्ठानों और त्योहारों को जीवंत बनाने वाली प्रदर्शन कलाओं से लेकर ढोकरा धातुकर्म, बांस की वस्तुओं जैसे रोजमर्रा के शिल्प तक, सोहराई और कोहबर जैसे भित्ति चित्रों के साथ, ये प्रदर्शनी दर्शाती है कि रचनात्मकता किस प्रकार दैनिक जीवन में अंतर्निहित है। कृषि उपकरण, फसलों की तस्वीरें और जीविका से जुड़ी कलाकृतियां जनजातियों और उनके प्राकृतिक परिवेश के बीच के घनिष्ठ बंधन को उजागर करती हैं, जबकि हथियार, औजार और आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र उनके साहस, लचीलेपन और स्वतंत्रता की अटूट भावना को उजागर करते हैं। ये दीर्घाएं मिलकर झारखंड की आदिवासी विरासत की एक सुसंगठित कहानी बुनती हैं-एक ऐसी कहानी जो सांस्कृतिक ज्ञान और पारिस्थितिक संतुलन के जीवंत सातत्य के रूप में इसकी लय, कलात्मकता और जीवन शैली का उत्सव मनाती है। इस प्रकार धरती आबा संग्रहालय न केवल कलाकृतियों का भंडार है, बल्कि झारखंड की जनजातीय आत्मा के प्रति एक जीवंत श्रद्धांजलि है, जो अपने पूर्वजों के ज्ञान का सम्मान करता है।

वाद्ययंत्र गैलरी: यहां आदिवासी वाद्य यंत्रों को भी प्रदर्शित किया गया है। नगाड़ा लोहे के फ्रेम वाला एक गोलाकार ढोल होता है जिसका आधार धान की भूसी से भरा होता है। गाय या भैंस की खाल से बने इसके सिर पर लकड़ी की छड़ियां बजाई जाती हैं। कंधे पर एक पट्टे से लटका हुआ, यह आमतौर पर शादियों और उत्सवों के दौरान बजाया जाता है, जिसकी डिजाइन में क्षेत्रीय विविधताएं होती हैं।

मांदर : मिट्टी और मवेशियों की खाल से बना एक पतला, बैरल के आकार का ढोल भी महली जनजाति द्वारा बनाया जाता है। पलाश के फूलों से बने सजावटी रंगों से इसे सजाया जाता है। झारखंड में, विशेष रूप से करम और सरहुल त्योहारों में इसका गहरा धार्मिक महत्व है।

सारंगी: जो वीणा या सितार के समान आकार का है, विभिन्न समारोहों में प्रयुक्त होने वाला एक धनुषाकार तार वाद्य है। लोक एवं भक्ति संगीत में एक मधुर संगत के रूप में कार्य करता है।

मुरली : मुरली, बांसुरी जैसी दिखने वाली एक बांसुरी, अपने अग्रभाग से हवा फूंककर और उंगलियों के छेद से स्वर समायोजित करके कोमल, मधुर स्वर उत्पन्न करती है। पारंपरिक रूप से चरवाहों द्वारा बजाया जाने वाला यह वाद्य लोक प्रदर्शनों और उत्सवों में भी बजाया जाता है।

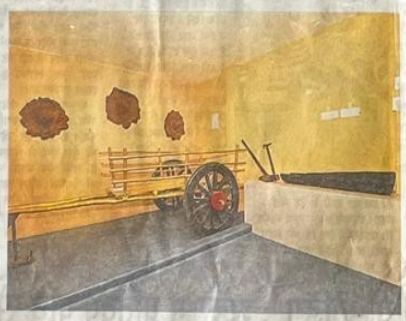

सरायकेला का छऊ मुखौटा

छऊ झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल का एक पारंपरिक नृत्य है, जिसमें युद्ध मुद्राएं, नाटकीय कथावाचन और लोक मान्यताओं का सम्मिश्रण देखने को मिलता है। इसकी तीन शैलियां, सरायकेला (झारखंड), पुरुलिया (पश्चिम बंगाल) और मयूरभंज (ओडिशा) को यूनेस्को ने 2010 में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का दर्जा दिया था। जहां सरायकेला और पुरुलिया शैलियों में मुखौटों का प्रयोग होता है, वहीं मयूरभंज शैलियों में भाव-भंगिमाओं और भंगिमाओं का प्रयोग होता है। सरायकेला छऊ अपनी लयबद्ध सुंदरता और कागज, मिट्टी, कपड़े और प्राकृतिक रंगों से बने सूक्ष्मता से तैयार किए गए मुखौटों के लिए प्रसिद्ध है, जो पौराणिक आकृतियों को दर्शाते हैं और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। ये मुखौटे केवल सजावट नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और भक्ति के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं।

दैनिक जीवन में हर दिन कला

यह गैलरी झारखंड के आदिवासी समुदायों के दैनिक जीवन में निहित कलात्मक अभिव्यक्तियों को बांस की टोकरियों, मिट्टी के बर्तनों, लकड़ी के औजारों और लोहे के औजारों जैसी हस्तनिर्मित वस्तुओं के माध्यम से प्रदर्शित करती है, जो उपयोगिता को सुंदरता और प्रतीकात्मकता के साथ जोड़ती है। यह बुनाई, मिट्टी के बर्तन, नक्काशी और लोहारी जैसे पारंपरिक कौशलों को उजागर करती है, और सोहराय, कोहबर और अल्पना जैसी दीवार और फर्श की कला में महिलाओं के रचनात्मक योगदान पर जोर देती है। पारिस्थितिक ज्ञान, स्थिरता और सामुदायिक मूल्यों को दर्शाते हुए, यह गैलरी दर्शाती है कि कैसे रोजमर्रा की वस्तुओं का सांस्कृतिक महत्व है और वे त्योहारों और अनुष्ठानों का अभिन्न अंग हैं। यह लुप्तप्राय स्वदेशी कला रूपों और प्रथाओं के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान के रूप में भी कार्य करती है।

बांस की वस्तुएं : झारखंड की महली जनजाति द्वारा पारंपरिक रूप से किया जाने वाला बांस शिल्प, अपनी उपयोगिता और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाने वाला एक विशिष्ट स्वदेशी कला रूप है। मुख्यतः रांची और आसपास के जिलों के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले बाँस महली उपसमूह, बांस से टोकरियां, ट्रे, बर्तन और टोपियां जैसी रोजमर्रा की और अनुष्ठानिक वस्तुएं बनाने में कुशल हैं।

ढोकरा आर्ट : पश्चिम बंगाल, झारखंड और छत्तीसगढ़ के ढोकरा और मल्हार समुदायों द्वारा प्रचलित ढोकरा कला, 'लास्ट वैक्स तकनीक' का उपयोग करके धातु-ढलाई की एक प्राचीन परंपरा है, जिसमें मिट्टी के सांचे में मोम की जगह पिघली हुई धातु का उपयोग करके विस्तृत कलाकृतियां बनाई जाती हैं। अपने जटिल ज्यामितीय, पुष्प और आलंकारिक डिजाइनों के लिए प्रसिद्ध, यह शिल्प कला, असाधारण कलात्मकता और सांस्कृतिक प्रतीकवाद। हड़प्पा सभ्यता से अपनी उत्पत्ति का पता लगाते हुए-जैसा कि मोहनजोदड़ो की "नृत्य करने वाली लड़की" में देखा जा सकता है।

पारंपरिक चित्रकारी : सोहराई और कोहबर झारखंड की दो पारंपरिक भित्ति कलाएं हैं जो प्रकृति, उर्वरता और ग्रामीण जीवन के बीच गहरे संबंध को दर्शाती हैं। सोहराय कला, जिसका अभ्यास मुख्यतः हजारीबाग के कृषि-पशुपालक समुदायों द्वारा किया जाता है, दिवाली के बाद मनाए जाने वाले फसल उत्सव सोहराई के दौरान बनाई जाती है। कोहबर कला, विवाह के दौरान दुल्हन के कमरे की दीवारों पर बनाई जाने वाली एक प्रतीकात्मक विवाह चित्रकला है, जिसे मुख्य रूप से कुर्मी समुदाय की महिलाएं बनाती हैं। प्राकृतिक सफेद और काले मिट्टी के रंगों के साथ कंघी-कट तकनीक का उपयोग करके बनाई गई इस कला में कमल, पक्षियों, जानवरों और पवित्र पौधों के रूपांकन हैं जो उर्वरता, सृजन और स्त्री शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों कला रूपों में महिलाओं की रचनात्मकता, पारिस्थितिक ज्ञान और कृषि एवं आध्यात्मिक जीवन की लय में निहित स्वदेशी परंपराओं की निरंतरता समाहित है।

झारखंड के पारंपरिक कृषि उपकरण : यह खंड टी झारखंड में आदिवासी और ग्रामीण समुदायों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक कृषि औजारों को प्रदर्शित करता है, जो लकड़ी, बांस और लोहे जैसी स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से तैयार किए गए हैं, जो स्वदेशी ज्ञान और शिल्प कौशल को उजागर करते हैं। प्रमुख उपकरणों में लकड़ी का हल (हल), लोहे की नोक वाला ब्लेड (फर), जुआ (जुआय), और मिट्टी समतल करने वाला बोर्ड (हेंगी/पट्टा) शामिल हैं, साथ ही रोजमर्रा के उपकरण जैसे फावड़ा (फावड़ा), कुदाल (कुदाल), हाथ से निराई करने वाला (खुरपा) और दरांती (हसिया) भी शामिल हैं। बैलगाड़ी (बैलगाड़ी) जैसे परिवहन उपकरण बांस और लकड़ी से बनाए जाते हैं, और लोहे की छड़ (सब्बेल, दरफोनी) जैसे भारी-भरकम औजार पत्थर तोड़ने और बाद में खड़ा करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। गैलरी में खेती के इन औजारों को देख सकते हैं।

झारखंड के पारंपरिक हथियार : झारखंड के आदिवासी समुदायों ने विभिन्न पारंपरिक हथियार बनाए हैं और उनके पास हथियारों का एक समृद्ध भंडार है। प्राचीन काल से ही इन हथियारों का इस्तेमाल दोहरे उद्देश्य, युद्ध और शिकार, के लिए किया जाता रहा है। ये लकड़ी और लोहे दोनों के मिश्रण से या केवल लोहे से बने होते हैं। जो हथियार लोहे से बने होते हैं, उन्हें विशेष रूप से गांव में रहने वाले करमाली, लोहरा और लोहार तैयार करते हैं। तलवार, धनुष-बाण, युद्ध कुल्हाड़ी, भाला, चाकू और ढाल आदि महत्वपूर्ण आदिवासी हथियार हैं। ये हथियार आदिवासी अनुष्ठानों, नृत्यों और उत्सव के अवसरों में भी दिखाई देते हैं। ये अवसर ताकत, पुरुषत्व और मानव-प्रकृति संबंध का प्रतीक होते हैं। झारखंड के मार्शल नृत्य अभ्यास, यानी छऊ नृत्य में, कलाकार रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कहानियों को नाटकीय रूप देने के लिए ढाल, तलवार और भाले का उपयोग करते हैं।

स्वतंत्रता सेनानी : एक गैलरी आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है। वीरांगना सिनगी-काली दई से लेकर तिलका मांझी के 1784 के विद्रोह, बुधु भगत के कोल विद्रोह और सिदो-कान्हू, चांद-भैरव और फूलो-झानो के नेतृत्व में हुए विशाल संताल हूल तक, इस क्षेत्र ने शोषण और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध शक्तिशाली विद्रोह देखे हैं। 1857 के विद्रोह के नेताओं टिकैत उमराव सिंह, शेख भिखारी और राजा विश्वनाथ शाहदेव ने गुरिल्ला रणनीति का इस्तेमाल करते हुए जमकर लड़ाई लड़ी, जबकि 19वीं सदी के उत्तरार्ध में बिरसा मुंडा का उलगुलान सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतिरोध का एक ऐतिहासिक आंदोलन रहा। स्वतंत्र भारत में, परमवीर चक्र विजेता अल्बर्ट एक्का की वीरता ने इस विरासत को आगे बढ़ाया। ये नायक मिलकर झारखंड की लचीलापन, न्याय, तथा पहचान और स्वतंत्रता की रक्षा के संघर्ष की स्थायी भावना को मूर्त रूप देते हैं।

रांची, 29 नवंबर, 2025 रांची जागरण www.jagran.com

आज राजधानी को मिलेगा एक और संग्रहालय, दिखेगी आदिवासी परंपरा की झलक

- झारखंड के आदिवासी जीवन और परंपराओं का आख्यान प्रस्तुत करता है यह संग्रहालय
- जनजातीय कार्य मंत्री जुएल ओराम व पद्मभूषण रामबहादुर राय करेंगे उद्घाटन

विकास भारती बिशुनपुर, बरियातू परिसर स्थित संग्रहालय में बैल गाड़ी • जागरण

विकास भारती बिशुनपुर, बरियातू परिसर में बने संग्रहालय में स्थापित झारखंड के स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाएं • जागरण

जागरण संवाददाता, रांची : राजधानी में एक और संग्रहालय का उद्घाटन होने जा रहा है, जो इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आइजीएनसीए) द्वारा क्यूरेट (व्यवस्थित) किया गया है। यह संग्रहालय विकास भारती बिशुनपुर, बरियातू कैंपस में स्थापित किया गया है। उद्घाटन शनिवार को दो बजे होगा। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता पद्मभूषण रामबहादुर राय करेंगे, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में जनजातीय कार्य मंत्रालय के मंत्री जुएल ओराम उपस्थित रहेंगे। वहीं, विशिष्ट अतिथि के रूप में रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ और विकास भारती के सचिव पद्मश्री डा. अशोक भगत भी कार्यक्रम में शामिल होंगे।

इस अवसर पर 'क्रांति नायक धरती आबा बिरसा मुंडा' सहित पांच पुस्तकों का लोकार्पण भी किया जाएगा। इन पुस्तकों में धरती आबा संग्रहालय की पुस्तिका, 'मुंडारी साहित्य की प्रासंगिकता', 'सुंदरबन के गीत' और 'अवनींद्रनाथ टैगोर: लीगेसी रीविटेड' शामिल हैं। अंतिम दोनों पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हैं।

चार एकीकृत दीर्घा : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा परिकल्पित और संवर्धित संग्रहालय में चार एकीकृत दीर्घाएं हैं। यहां झारखंड के आदिवासी जीवन और परंपराओं का एक समग्र आख्यान प्रस्तुत किया गया है। यहां आकर आदिवासी संस्कृति में कला, आजीविका, आध्यात्मिकता और पर्यावरण के बीच, गहरे अंतर्संबंधों को देख सकते हैं। पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्रों, अनुष्ठानों और त्योहारों को जीवंत बनाने वाली कलाओं से लेकर डोकरा धातुकर्म, बांस की वस्तुओं जैसे राजमहल के शिल्प तक, सोहराई और कोहबर जैसे भित्ति चित्रों के बारे में भी जानकारी है। आदिवासी जीवन कृषि से गहरे जुड़ा है। यहां कृषि उपकरण, फसलों की तस्वीरें, जीविका से जुड़ी कलाकृतियां, हथियार और औजार भी हैं। एक दीर्घा आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की है जहां उनकी वीरता की कहानी बयां की गई है।

वाद्ययंत्र गैलरी: यहां आदिवासी वाद्य यंत्रों को भी प्रदर्शित किया गया है। नगाड़ा, मांदर, सारंगी, मुरली आदि को प्रदर्शित किया गया है। छऊ नृत्य के मुखौटे भी यहां हैं। छऊ की तीन शैलियों, सरायकेला (झारखंड), पुरुलिया (पश्चिम बंगाल) और मयूरभंज (ओड़िशा) को यूनेस्को ने 2010 में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का दर्जा दिया था।

बांस की वस्तुएं : झारखंड की महली जनजाति द्वारा पारंपरिक रूप से किया जाने वाला बांस शिल्प, अपनी उपयोगिता और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाने वाला एक विशिष्ट स्वदेशी कला रूप है।

डोकरा आर्ट

पश्चिम बंगाल, झारखंड और छत्तीसगढ़ के डोकरा और मल्हार समुदायों द्वारा प्रचलित डोकरा कला, 'लास्ट वैक्स तकनीक' का उपयोग करके धातु-ढलाई की एक प्राचीन परंपरा है। इसमें मिट्टी के सांचे में मोम की जगह पिघली हुई धातु का उपयोग कर विस्तृत कलाकृतियां बनाई जाती हैं।

रांची की अन्य गैलरियां

रांची में दो और संग्रहालय है। खेलगांव स्थित राज्य सरकार के संग्रहालय में भी आदिवासी जीवन के साथ राज्य की दुर्लभ प्रतिमाएं, सिक्के, पारंपरिक हथियार आदि का प्रदर्शन किया गया है। इसके अलावा मोरहाबादी में जनजातीय शोध संस्थान में भी आदिवासी जीवन की झांकी है। यहां मूर्तियों के जरिए राज्य की 32 जनजातियों के बारे में उपयोगी जानकारी दी गई है।

जनजातीय समाज की सबसे बड़ी जरूरत शिक्षा है : जुएल ओराम

संवाददाता, रांची

विकास भारती बिशुनपुर के रांची परिसर में शनिवार को धरती आबा संग्रहालय का उद्घाटन किया गया. उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जनजातीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार के मंत्री जुएल ओराम और विशिष्ट अतिथि के रूप में रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ और विकास भारती के सचिव अशोक भगत उपस्थित थे. उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष डॉ राम बहादुर राय ने की.

मुख्य अतिथि मंत्री जुएल ओराम ने कहा कि अशोक भगत के योगदान से जनजातीय समाज लाभान्वित हुआ है.आज भी वे जनजातियों की भलाई के लिए प्रयासरत रहते हैं. उन्होंने कहा कि जनजातीय समुदाय की सबसे बड़ी जरूरत शिक्षा की है. प्रधानमंत्री के समक्ष इस बातों को रखा गया है. 79 हजार करोड़ खर्च कर 17 मंत्रालयों द्वारा सामूहिक रूप से 549 जिलों में 25 तरह के कार्य जैसे रोड, आवास, पानी, बिजली, स्वास्थ्य का निर्माण किया जायेगा. रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने भी संबोधित किया. विकास भारती के सचिव अशोक भगत ने विषय प्रवेश कराते हुए जनजातीय समाज के विकास के लिए संस्था द्वारा राज्य स्तर पर बीते 43 सालों से किये जा रहे प्रयास को बताया. कार्यक्रम में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान - जनजातीय कौशल केंद्र, जनशिक्षण संस्थान का ऑनलाइन उद्घाटन सहित पांच पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया. डॉ राम बहादुर राय ने जनजातीय गौरव को पुनः स्थापित करने पर बल दिया. कार्यक्रम में विकास भारती की उपाध्यक्ष डॉ रंजना चौधरी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक कुमार संजय झा, कीर्ति सिंह सहित अन्य उपस्थित थे.

धरती आबा संग्रहालय के उद्घाटन पर स्मारिका का विमोचन करते अतिथि.

जनजातीय संस्कृति, अस्मिता का संरक्षण राष्ट्रीय जिम्मेदारी

बोले ओराम

- विकास भारती परिसर में धरती आबा बिरसा मुंडा संग्रहालय का उद्घाटन
- रक्षा राज्यमंत्री बोले- देशभर में स्थापित किए जा रहे हैं 11 जनजातीय संग्रहालय

रांची, विशेष संवाददाता। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, विकास भारती बिशुनपुर के सहयोग से निर्मित धरती आबा बिरसा मुंडा संग्रहालय का शनिवार को लोकार्पण विकास भारती बरियातू परिसर में किया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री जुएल ओराम थे। उन्होंने कहा कि जनजातीय संस्कृति, इतिहास और अस्मिता का संरक्षण केवल सांस्कृतिक दायित्व नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। उन्होंने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और विकास भारती द्वारा जनजातीय धरोहर के संरक्षण में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

इस अवसर पर रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ ने कहा कि प्रधानमंत्री के विजन के अनुरूप देशभर में 11 जनजातीय संग्रहालय स्थापित किए जा रहे हैं और रांची का धरती आबा बिरसा मुंडा संग्रहालय इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पद्म भूषण राम बहादुर राय, अध्यक्ष इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र मंत्रालय ने की। स्वागत भाषण क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने दिया। समारोह में पद्मश्री डॉ अशोक भगत मौजूद थे।

संग्रहालय का पुनर्निर्माण इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव डॉ सच्चिदानंद जोशी के मार्गदर्शन में आधुनिक संग्रहालय विज्ञान के मानकों के अनुरूप किया गया है। संग्रहालय को धरती आबा बिरसा मुंडा की स्मृति, संघर्ष, सांस्कृतिक चेतना और जनजातीय अस्मिता को समर्पित किया गया है। राम बहादुर राय ने कहा कि यह संग्रहालय जनजातीय तीर्थ है, जहां आगंतुक अपनी सांस्कृतिक जड़ों से आध्यात्मिक रूप से जुड़ते हैं।

रांची रविवार 30 नवंबर, 2025
City भास्कर

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के 150वीं जयंती वर्ष पर रांची में संग्रहालय और कौशल केंद्र का हुआ उद्घाटन

78 जनजातीय संग्रहालय बनेंगे, ₹62 करोड़ होंगे खर्च : जुएल उरांव

सिटी रिपोर्टर • केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल उरांव ने शनिवार को रांची में धरती आबा जनजातीय संग्रहालय (अरोग्य भवन) और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष कौशल केंद्र (मखमंदरो) का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उलगुलान के नायक भगवान बिरसा मुंडा पर आधारित एक पुस्तक और 'बचपन अक्षर ज्ञान वर्णमाला' पुस्तक का विमोचन विकास भारती के सहयोग से किया गया। जुएल उरांव ने कहा कि जनजातीय मंत्रालय के पास केवल 7.5% खर्च करने का प्रावधान था, लेकिन पूर्व में यह राशि भी खर्च नहीं हो पाती थी। अब पीएम नरेंद्र मोदी ने इसके लिए बड़ा बजट पास किया है।

549 जिलों और 2,911 ब्लॉक में लागू होगी योजना

केंद्रीय मंत्री ने घोषणा की कि देश भर में कुल 78 जनजातीय संग्रहालय बनाए जाएंगे, जिन पर 62 करोड़ खर्च किए जाएंगे।

जनजातीय उत्थान के लिए बड़ी योजना: मंत्री ने बताया कि यह योजना 549 जिलों और 2,911 ब्लॉक में लागू होगी, जिससे 68,63,868 गांव कवर होंगे।

आवास और सड़कें: 25 हजार किलोमीटर की सड़कें बनाई जाएंगी और जनजातियों के लिए 20 लाख अतिरिक्त आवास निर्मित होंगे।

शिक्षा प्राथमिकता: उन्होंने कहा कि सरकार एक गांव को चुनकर वहां सड़क, पानी, बिजली जैसी सभी व्यवस्थाओं को बेहतर बना रही है। शिक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है और आने वाले समय में जनजातीय बच्चे जवाहर नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय और सैनिक स्कूलों में भी आगे बढ़ेंगे।

संग्रहालय को जनजातीय तीर्थ क्षेत्र कहा जाए : डॉ. राम बहादुर राय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष डॉ. राम बहादुर ने सुझाव दिया कि इसे 'जनजातीय संग्रहालय' की जगह 'जनजातीय तीर्थ क्षेत्र' कहा जाए तो अधिक उचित होगा। उन्होंने कहा कि पद्मश्री अशोक भगत को मैंने कहा कि यदि आप विद्यार्थी परिषद के प्रदेश अध्यक्ष के बाद राजनीति में जाना चाहते हैं, चुनाव लड़ना चाहते हैं, तो अलग बात है। अन्यथा मैं आप से कहूंगा कि आप बिशुनपुर जनजातीय क्षेत्र में जाकर जनजातियों के उत्थान के लिए कार्य करें। उन्होंने मेरे इस आग्रह को स्वीकार किया और विगत 43 वर्षों से जनजातीय उत्थान के लिए संघर्षरत है। उन्होंने अपना पूरा जीवन जनजातियों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया।

संस्था के सचिव पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि 1970 में विद्यार्थी परिषद से जुड़ने के बाद से उनका उद्देश्य था कि यह क्षेत्र वनवासी क्षेत्र की गतिविधियों का केंद्र बने। आज छोटे रूप में संग्रहालय को खड़ा किया जा रहा है। उनकी संस्था का 15,000 गांवों से संपर्क है। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार, पद्मश्री बलबीर दत्त, राजनीतिज्ञ नागेंद्रनाथ त्रिपाठी, पूर्व राज्यसभा सांसद समीर उरांव, सत्यनारायण मुंडा, डॉ एचपी अग्रवाल, एनपी सिंह, पूर्व चेंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री, धन्यवाद ज्ञापन आदि मौजूद रहे।

जनजातीय मंत्रालय अटलजी ने बनाया था: संजय सेठ

केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने इस मौके पर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को याद किया। उन्होंने कहा कि वाजपेयी जी ने ही पहली बार जनजातीय मंत्रालय का गठन किया था। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज ने कभी अपनी वेशभूषा, खान-पान और संस्कृति को नहीं छोड़ा।

10 राज्यों में बन रहे संग्रहालय: उन्होंने जानकारी दी कि देश के 10 राज्यों में जनजातीय संग्रहालय बनाए जा रहे हैं।

बिरसा मुंडा की जयंती: उन्होंने कहा कि आज देश के 140 करोड़ लोग भगवान बिरसा मुंडा की जयंती मनाते हैं। संग्रहालय में 100 साल पुराने वाद्य यंत्र और कलाकृतियां समेटकर रखी गई हैं, जो आने वाले समय में आदिवासी संस्कृति को जानने का एक महत्वपूर्ण जरिया बनेंगी।

धरती आबा संग्रहालय में जनजातीय कला-संस्कृति की मिलेगी जानकारी

सिटी रिपोर्टर • जनजातियों के विविध विधाओं की जानकारी अब लोगों को एक ही छत के नीचे मिल सकेगी। जनजातीय जीवन और रहन-सहन की करीब सारी जानकारी आरोग्य भवन बरियातू रोड के विकास भवन परिसर में लोग पा सकते हैं। शनिवार को आरोग्य भवन में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने इसे निर्मित किया है। जिसका उद्घाटन केंद्रीय जनजातीय मंत्री जुएल ओराम ने किया। इसमें न केवल जनजातियों के जीवन स्तर एवं शैलियों को दर्शाया गया है, बल्कि झारखंड के शहीदों की भी जानकारी अंकित कराई गई है।

अगर कोई आदिवासी रहन एवं संस्कृति पर अध्ययन करना चाहते हैं या जानकारी लेना चाहते हैं तो यहां आ सकते हैं। चार भागों में आदिवासी विधाओं की झलक दर्शायी गई है। एक छत के नीचे आदिवासी संस्कृति, कला, आजीविका, आध्यात्मिकता और पर्यावरण के बीच गहरे संबंध को दर्शाया गया है। पारंपरिक संगीत के वाद्ययंत्रों को बखूबी से दिखाया गया है। आदिवासियों के अनुष्ठान, खान-पान को जीवंत कलाओं से दिखाया गया है।

अंतिम भाग में झारखंड के शहीदों के तैल चित्र और जीवनी का है उल्लेख

परिसर के अंतिम भाग में झारखंड के तमाम शहीद जैसे भगवान बिरसा मुंडा, तेलंगा खड़िया, अलबर्ट एक्का, फुलो-झानो, सिनगी दई, वीर बुधु भगत, विश्वनाथ शाहदेव, टिकैत उमरांव सिंह सहित अन्य शहीदों की जीवनी के साथ उनका तैल चित्र लगाया गया है। लोगों को एक ही जगह झारखंड के तमाम शहीदों की जानकारी मिल जाएगी।

Union Minister Jual Oram inaugurates Birsa Munda museum

PIONEER NEWS SERVICE
Ranchi

Jual Oram, Minister of Tribal Affairs, Sanjay Seth, Minister of State for Defence, Padma Shri recpient Dr. Ashok Bhagat and Padma Bhushan awardee Ram Bahadur Rai, President of the IGNCA Trust during the inauguration of Dharti Aba Tribal Museum in Ranchi on Saturday

The 150th birth anniversary of Bhagwan Birsa Munda was commemorated with the inauguration of the Dharti Aaba Birsa Munda Sangrahalay at Vikas Bharti, Bariatu, Ranchi. The museum, jointly developed by the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), Regional Centre, Ranchi, and Vikas Bharti, Bishunpur, was formally opened on Saturday in a ceremony marked by the presence of several distinguished guests.

The inauguration was led by Chief Guest Jual Oram, Minister of Tribal Affairs, while Sanjay Seth, Minister of State for Defence, attended as the Guest of Honour. Padma Shri recipient Dr. Ashok Bhagat and Padma Bhushan awardee Ram Bahadur Rai, President of the IGNCA Trust, also graced the event. Dr. Kumar Sanjay Jha, Regional Director, IGNCA, delivered the Welcome Address.

The newly opened museum offers a detailed glimpse into the cultural, artistic, and social life of Jharkhand's tribal communities. Exhibits include traditional tools, artworks, tribal weapons, musical instruments, household objects, and diverse art forms such as Dokra, Sohrai, Patkar, and bamboo craft. The curation highlights the region's ancestral knowledge systems and centuries-old traditions. Addressing the gathering, Jual Oram recalled his long association with Dr. Ashok Bhagat and lauded the collaborative effort between IGNCA and Vikas Bharti to preserve tribal heritage. Guest of Honour Sanjay Seth emphasised the national significance of celebrating Birsa Munda's 150th birth anniversary and shared that 11 tribal museums are being developed across India under the vision of the Prime Minister to protect and promote tribal identity. He described the Sangrahalay as an inspiring tribute to Jharkhand's indigenous communities.

Presiding over the event, Shri Ram Bahadur Rai said the museum should be viewed as a "Janjatiya Tirth" — a pilgrimage of tribal culture — where visitors can experience peace and a spiritual connection with their roots. He stressed the need for continuous research and broader recognition of the region's tribal arts.

Dr Ashok Bhagat announced the launch of the Dharti Aaba Kaushal Vikas Kendra to support skill development among tribal youth. Several IGNCA publications, including Kranti Nayak: Dharti Aaba Birsa Munda and the Birsa Munda Sangrahalay Catalogue, were also released.

Visitors praised the initiative, noting that the museum will serve as an important educational space for students and young researchers, helping them understand tribal resilience, ecological wisdom, and cultural identity.

Union Tribal Affairs minister inaugurates Dharti Aaba Museum in Ranchi

PTI | Updated: November 29, 2025 19:21 IST

THE WEEK
PTI
NEWS UPDATE

Ranchi, Nov 29 (PTI) Union Tribal Affairs minister Jual Oram on Saturday inaugurated the 'Dharti Aaba Janjatiya Museum' here.

The museum, set up in association with Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), was established at the Ranchi office complex of Vikas Bharati in Bishunpur, Bariyatu.

Inaugurating the museum, Oram said, "This museum is a significant effort to preserve the heritage, culture, art, and history of our tribal society. The biggest need of the tribal community is education, and I have placed this matter before the Prime Minister."

हिन्दी दैनिक
झारखंड दर्शन

Shreya Gupta 11/28/2025 1:09:56 PM 19 02

धरती आबा संग्रहालय और पुस्तक क्रांति नायक धरती आबा बिरसा मुंडा का लोकार्पण कल

रांची (RANCHI): बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती के अवसर पर रांची के बरियातू स्थित आरोग्य भवन में 29 नवंबर को धरती आबा संग्रहालय का उद्घाटन और 'क्रांति नायक धरती आबा बिरसा मुंडा' पुस्तक का लोकार्पण किया जाएगा.

अतिथि के रूप में शामिल होंगे राज्यमंत्री संजय सेठ

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर केंद्रीय जनजातीय कार्यमंत्री जुएल उरांव और विशिष्ट अतिथि रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ शामिल होंगे. कार्यक्रम की अध्यक्षता इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष और पद्मभूषण राम बहादुर राय करेंगे. कार्यक्रम में विकास भारती के सचिव और पद्मश्री अशोक भगत उपस्थित रहेंगे. यह कार्यक्रम रांची के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और विकास भारती विशुनपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया है.

ETV Bharat / State

केंद्रीय मंत्री जुएल उरांव ने किया रांची में धरती आबा संग्रहालय का उद्घाटन, जानें क्या है म्यूजियम में खास

रांची में धरती आबा संग्रहालय का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री जुएल उरांव ने किया. इस दौरान उन्होंने पांच पुस्तकों का भी लोकार्पण किया.

जनजातीय सभ्यता संस्कृति को समर्पित है संग्रहालय

धरती आबा बिरसा मुंडा संग्रहालय में जनजातीय सभ्यता संस्कृति से जुड़े कई ऐसी चीजें हैं जो अब लुप्त होने के कगार पर हैं. इस संग्रहालय में आदिवासियों के वाद्ययंत्र, परिधान और घरेलू सामान जो समय के साथ समाप्त होते जा रहे हैं उन्हें बड़े ही सुसज्जित ढंग से रखा गया है.

Union Tribal Affairs minister inaugurates Dharti Aaba Museum in Ranchi

RANCHI: (Nov 29) Union Tribal Affairs minister Jual Oram on Saturday inaugurated the 'Dharti Aaba Janjatiya Museum' here.

The museum, set up in association with Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), was established at the Ranchi office complex of Vikas Bharati in Bishunpur, Bariyatu.

Inaugurating the museum, Oram said, "This museum is a significant effort to preserve the heritage, culture, art, and history of our tribal society. The biggest need of the tribal community is education, and I have placed this matter before the Prime Minister."

Preserving Heritage: The Inauguration of Dharti Aaba Janjatiya Museum

Union Tribal Affairs Minister Jual Oram inaugurated the 'Dharti Aaba Janjatiya Museum' in Ranchi, highlighting its role in preserving tribal heritage. The initiative forms part of a larger effort involving several ministries to enhance tribal education and development across India.

30-11-2025

www.jagran.com

जागरण सिटी रांची

संग्रहालय व कौशल केंद्र का हुआ उद्घाटन

देशभर में बनने हैं 11 जनजातीय संग्रहालय, रांची का बिरसा मुंडा सहित चार बनकर तैयार, सात का काम जारी

- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, रांची के सहयोग से बना है जनजातीय संग्रहालय
- उद्घाटन समारोह में पद्मभूषण रामबहादुर राय ने कहा- संग्रहालय नहीं, जनजातीय तीर्थ क्षेत्र कहिए

विकास भारती परिसर में संग्रहालय के उद्घाटन के मौके पर उपस्थित केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम, राम बहादुर राय, अशोक भगत।

जागरण संवाददाता, रांची: पद्मभूषण रामबहादुर राय ने कहा कि इसे संग्रहालय नहीं, जनजातीय तीर्थ क्षेत्र कहना चाहिए। हम तीर्थ क्षेत्र में जाते हैं तो एक आंतरिक अनुभूति होती है। हम यहां से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। अपनी संस्कृति, समाज और परंपरा से परिचित होते हैं। वे शनिवार को बरियातू रोड स्थित विकास भारती में धरती आबा संग्रहालय के उद्घाटन के मौके पर बोल रहे थे। अध्यक्षता करते हुए उन्होंने जनजातीय संग्रहालय की विशेषता के बारे में बताया। वंदे मातरम् के इतिहास पर भी रोशनी डाली। कहा, वंदे मातरम राष्ट्रीय चेतना का गीत है। इसे बंकिम ने लिखा नहीं, यह उनके एक अनोखी रात में भीतर उतरा और उसे लिपिबद्ध किया। वे संन्यासी आंदोलन से प्रभावित थे और लगातार इसको लेकर चिंतन कर रहे थे। जब गीत लिखा और उस समय दीपक मित्र को दिखाया तो उन्होंने कहा, यह समझ में नहीं आ रहा।

उन्होंने बंकिम को सुझाव दिया कि इस पर उपन्यास लिखिए। इसके बाद उन्होंने आनंद मठ लिखा और इस गीत को इसमें शामिल कर दिया। 1896 में पहली बार कांग्रेस के अधिवेशन में गाया गया। टैगोर ने इसे भजन की तरह गाया। 1923 में पहली बार मो अली ने इसका विरोध किया। 1937 में कांग्रेस ने इसके दो पैराग्राफ निकाल दिए। इसके निकाले जाने के बाद भारत माता के समर्पण का भाव ही गायब हो गया। उन्होंने इसके पूर्व प्रधानमंत्री मोदी के इस प्रयास की प्रशंसा की कि उन्होंने आजादी के 75 साल पूरे होने पर अनसंग के बारे में लिखने की अपील की और इस तरह पूरे देश में यह अभियान चला। बनारस ने भी एक अनसंग हीरो की खोज की-जगत सिंह। जगत सिंह ने ही सारनाथ की खोज की थी और जगत सिंह ने ही 1857 से पहले बनारस में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ 1797-1799 में विद्रोह किया था। लखनऊ के नवाब जब हरा दिए गए तो उन्होंने बनारस में जगत सिंह से मदद मांगी और तब हिंदू-मुस्लिम दोनों ने मिलकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ युद्ध किया। इस तरह बाबू जगत सिंह का इतिहास सामने आया।

इस मौके पर केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री जुएल ओराम ने बताया कि देश भर में 11 जनजातीय संग्रहालय बन रहे हैं। रांची का बिरसा मुंडा सहित चार बन गए हैं। सात पर काम किया जा रहा है। उन्होंने आदिवासियों के विकास को लेकर प्रधानमंत्री मोदी के विजन को बताया और कहा, प्रधानमंत्री जनजातीय समाज की पढ़ाई के लिए बहुत कुछ कर रहे हैं। उनके गांवों में बिजली, पानी, सड़क व अस्पताल के लिए अलग से वित्त का प्रबंधन किया है। 17 मंत्रालय इस काम में मदद कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार सबको नौकरी नहीं दे सकती लेकिन रोजगार के लिए कौशल का विकास कर सकती है। इस मौके पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची व विकास भारती, बिशुनपुर के सहयोग से धरती आबा बिरसा मुंडा संग्रहालय व आदिवासी कौशल केंद्र का उद्घाटन भी किया। इसके पूर्व रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने भी संबोधित किया। कहा, दस राज्यों में 11 संग्रहालय बन रहे हैं। प्रधानमंत्री ने धरती आबा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की और आज 140 करोड़ जनता उनकी जयंती मना रही है। इस मौके पर पद्मश्री डा अशोक भगत ने भी संबोधित किया। स्वागत भाषण करते हुए कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डा. कुमार संजय झा ने कहा कि हमारे देश में संग्रहालयों की संख्या बहुत कम है। इसकी संख्या और बढ़नी चाहिए। यहां धरती आबा संग्रहालय में आदिवासी संस्कृति, समाज, परंपरा और वाद्य की जीवंत झांकियां हैं। यहां आकर इस जीवंत संस्कृति से रूबरू हो सकते हैं। डा झा ने बताया कि संग्रहालय का पुनर्निर्माण सदस्य सचिव डा. सच्चिदानंद जोशी के मार्गदर्शन में आधुनिक संग्रहालय विज्ञान के मानकों के अनुरूप किया गया है। संग्रहालय की दीर्घाओं में झारखंड की जनजातीय समुदायों की भौतिक संस्कृति, कला-शिल्प, पारंपरिक वाद्ययंत्र, छऊ मुखौटे, डोकरा कला, बांस शिल्प, कृषि-पद्धतियों, सोहराय एवं कोहबर चित्रकला तथा दैनिक जीवन की वस्तुओं का समृद्ध संग्रह प्रस्तुत किया गया है। एक विशेष दीर्घा झारखंड के महान स्वतंत्रता सेनानियों को भी समर्पित है।

पांच पुस्तकों का लोकार्पण

इस अवसर पर इंदिरा गांधी कला केंद्र की पांच पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। इसमें 'क्रांतिनायक: धरती आबा बिरसा मुंडा', 'कैटलाग आफ धरती आबा संग्रहालय', 'मुंडारी साहित्य की प्रासंगिकता', 'बोट्स एंड सांग आफ सुंदरबन', 'अवनींद्रनाथ टैगोर: लीगेसी रीविजिटेड पुस्तकें शामिल हैं। संचालन डा रंजना कुमारी ने किया। कार्यक्रम में डा अजय सिंह, नागेंद्र नाथ त्रिपाठी, साई विवि के कुलपति डा एसपी अग्रवाल, रांची विवि की डा स्मृति सिंह, डा सुदेश साहू उपस्थित थे।

आज
30-11-2025
www.ajhindidaily.com
राजधानी

विकास भारती में धरती आबा संग्रहालय का उद्घाटन व जनजातीय समाज पर आधारित पांच पुस्तकों का लोकार्पण

देश में जनजातियों के उत्थान पर खर्च होंगे 79 हजार करोड़ : जुएल ओराम

धरती आबा संग्रहालय जनजातीय समाज के लिये तीर्थ क्षेत्र के समान : डॉ. रामबहादुर राय

छाया : राजकुमार

रांची। धरती आबा संग्रहालय का उद्घाटन शनिवार को बरियातू रोड स्थित आरोग्य भवन के विकास भारती परिसर में किया गया। संग्रहालय का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल उरांव, विशिष्ट अतिथि केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) के अध्यक्ष पद्मभूषण रामबहादुर राय एवं विकास भारती के सचिव अशोक पद्मश्री डॉ. अशोक भगत ने संयुक्त रूप से किया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष और पद्मभूषण डॉ राम बहादुर राय ने की। इस अवसर पर धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान–जनजातीय कौशल केन्द्र, जनशिक्षण संस्थान का ऑनलाइन उद्घाटन सहित पांच पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। इन पुस्तकों में धरती आबा संग्रहालय की पुस्तिका, 'मुंडारी साहित्य की प्रासंगिकता,' सुंदरबन के गीत और अवनींद्र नाथ टैगोर लीगेसी रीविटेड एवं ट्राईबल स्टडी सेंटर, विकास भारती की ओर से मावड़ो भाषा में लिखी गई पुस्तक बचपन अक्षरज्ञान शामिल है। इसके पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत विकास भारती की छात्राओं की ओर से गाए जनजातीय स्वागत गीत से हुई। इसके बाद अतिथियों का स्वागत और परिचय विकास भारती की उपाध्यक्षा डॉ रंजना चौधरी ने किया। विकास भारती के सचिव पद्मश्री अशोक भगत ने विषय प्रवेश कराते हुये जनजातीय समाज के विकास के लिए संस्था की ओर से राज्य स्तर पर विगत 43 वर्षों से किये जा रहे प्रयास का संक्षेप में जिक्र किया। उन्होंने बताया कि संस्थान की ओर से झारखंड के 1500 गांवों में जनजातीय समाज के कल्याण का कार्य किया जा रहा है। इसके बाद आईजीएनसीए के क्षेत्रीय निदेशक कुमार संजय झा ने धरती आबा संग्रहालय के विषय में उपस्थित लोगों को अवगत कराया। उन्होंने इस संग्रहालय की विशेषताओं और इसके निमार्ण से संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डाला। वहीं विशिष्ट अतिथि रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने धरती आबा भगवान बिरसा मुण्डा के विषय में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंति, राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के 150वीं वर्षगांठ, सरदार पटेल की 150 वीं जयंति एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के 100वें स्थापना वर्ष में किया गया है। उन्होंने धरती संग्रहालय की स्थापना को देशवासियों के लिए गौरव का क्षण बताया। सेठ ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश के 10 राज्यों में 11 बड़े–बड़े संग्रहालय खोलने का निर्णय लिया है। इसके लिए 250 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने संग्रहालय निर्माण के जरिए देश पर सर्वस्व न्योछावर करने वाले महान क्रांतिवीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा संग्रहालय में सैकड़ों वर्ष पुराने वाद्य यंत्र और अन्यम उपयोगी वस्तुएं रखी गई हैं। इसके लिए विकास भारती बधाई का पात्र है। संग्रहालय की मदद से भविष्य में जनजातीय समाज को समझने में मदद मिलेगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि विकसित भारत में देश का आदिवासी समाज अग्रणी भूमिका निभाएगा।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम ने कहा कि देश के जनजातीय समुदाय की सबसे बड़ी जरूरत शिक्षा की है। उन्होंने कहा कि जनजातीय की शिक्षा को लेकर उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समक्ष कार्य करने की इच्छा प्रकट की थी। आरोम ने कहा कि देश के जनजातीय समाज के उत्थान पर 79 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। इस राशि को 17 केंद्रीय मंत्रालयों की ओर से सामुहिक रूप से देश के 549 जिलों के 2911 प्रखंडों के 63845 गांवों में 25 तरह के विकास कार्य (रोड, आवास, पानी, बिजली, स्वास्थ्य, 25 लाख जनजतीय आवास, 1000 मोबाईल युनिट, 728 जवाहर केन्द्रीय विद्यालय, 78 जनजातीय संग्रहालयों का निर्माण) होंगे। उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुण्डा का गांव मौजूदा समय में तीर्थ स्थल बन गया है। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार की ओर से देश में बनाए जा रहे एकलव्य विद्यालय नवोदय और केंद्रीय विद्यालय से भी आगे रहेगा। उनका विभाग इस पर काम कर रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पद्मभूषण डॉ रामबहादुर राय ने नरेन्द्र मोदी की ओर से किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यो के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने इस दौरान जनजातीय गौरव को पुनः स्थापित करने पर जोर दिया। डॉ राय ने कहा कि भारत का इतिहास विश्व के अन्य देशों के इतिहास से अधिक गौरवमयी और बहुत विशाल है। इसे जितना अधिक जाना और अध्ययन किया जाए, उतना ही कम है। उन्होंने कहा कि अब तक हमें बनारस के जिन ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराया गया था, वह गलत था। उन्होंने उपस्थित लोगों को बनारस के वास्तविक इतिहास से अवगत कराया। डॉ राय ने कहा कि 1857 से पहले बनारस मे बाबू जगत सिंह के नेतृत्व में हिंदू और मुस्लिम के लिए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ा गया था। इतिहास की इस सच्चाई से हम सभी को अनभिज्ञ रखा गया। उन्होंने कहा कि देश में प्रचारित किया गया कि सारनाथ की खोज कनिंघम ने की थी, लेकिन सत्य यह है कि इसकी खोज जगत सिंह ने ही की थी। उन्होंने धरती आबा संग्रहालय को जनजातियों के तीर्थ क्षेत्र के समान बताया है। उन्होंने कहा कि लोग इस संग्रहालय को देखने आएंगे इससे एक नए युग की शुरूआत होगी। कार्यक्रम का संचालन विकास भारती की एचआर कृति सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विकास भारती के संयुक्त सचिव महेन्द्र भगत ने किया। इस अवसर पर राज्यसभा के पूर्व सांसद समीर उरांव, क्षेत्रीय संगठन मंत्री नागेनाथ त्रिपाठी, पद्मश्री और वरिष्ठ पत्रकार बलवीर दत्त, भाजपा नेता सुबोध सिंह गुड्डू, विकास भारती के अध्यक्ष डॉ अजय कुमार सिंह, भाजपा के पूर्व विधायक शिवशंकर उरांव, झारखंड चेंबर ऑफ कॉमर्स के पूर्व अध्ययक्ष किशोर मंत्री सहित कई विश्विविद्यालयों के कुलपति सहित सैकड़ों जनजातीय समाज के लोग और प्रबुद्ध मौजूद रहे।